पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 4

पौलुस और फिलेमोन

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
पृष्ठभूमि 1
लोग 2
फिलेमोन...2
उनेसिमुस...3
गवाह 4
समस्या..4
मध्यस्थता..6
उनेसिमुस की विनती...6
पौलुस का समझौता...7
संरचना और विषय-वस्तु...9
अभिवादन...9
आभार-प्रदर्शन 10
विनती...11
वकील के रूप में पौलुस 11
विनती करने वाले के रूप में उनेसिमुस..12
स्वामी के रूप में फिलेमोन...13
शासक के रूप में परमेश्वर...14
विनती 15
भरोसा 17
अंतिम अभिनंदन 18
आधुनिक प्रयोग...18
उत्तरदायित्व...18
करुणा..20
दया...21
मध्यस्थता 21
मेलमिलाप...22
उपसंहार...23

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय चार

पौलुस और फिलेमोन

परिचय

हम सब ऐसे समय से होकर जाते हैं जब हम महसूस करते हैं कि हमने किसी मित्र के प्रति कोई अहसान किया है और वह हमारे प्रति ऋणी है। शायद आपने अपने मित्र के लिए कुछ अच्छा किया हो- उसे कुछ उपहार दिए हों या किसी विशेष रूप में उसकी सहायता की हो। और फिर एक समय आता है जब आपको सहायता की आवश्यकता है, और आप अपने उस मित्र के पास जाकर सहायता मांगने के द्वारा वह ऋण चुकाने को कहते हैं। ऐसे समयों में हम प्राय: अपने मित्रों के पास जाकर कहते हैं, "मैं जानता हूँ कि शायद तुम यह करना पसंद नहीं करोगे, परन्तु मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। और तुम पर मेरा अहसान भी है।"

कई रूपों में, प्रेरित पौलुस ने ऐसी ही परिस्थिति का सामना किया। उसे अपने मित्र फिलेमोन से सहायता की आवश्यकता थी। अत: उसने अपने मित्र फिलेमोन को यह स्मरण करवाते हुए कि पौलुस ने उसके लिए कितना कुछ किया है, उससे सहायता का आग्रह करते हुए पत्र लिखा।

यह हमारी श्रृंखला "पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियां" का चौथा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है "पौलुस और फिलेमोन," क्योंकि हम पौलुस द्वारा अपने मित्र फिलेमोन, कुलुस्से की कलीसिया का एक सदस्य, को लिखी पत्री को ध्यान से देखेंगे। हम देखेंगे कि किस प्रकार पौलुस ने फिलेमोन से उनेसिमुस के साथ मेलमिलाप करने की विनती करते हुए सहायता मांगी। उनेसिमुस फिलेमोन का दास था जिसने हाल ही में मसीह पर विश्वास किया था।

पौलुस और फिलेमोन का हमारा अध्ययन तीन भागों में विभाजित होगा। पहला, हम फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण करेंगे। दूसरा, हम फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषयवस्तु की जांच करेंगे। और तीसरा, हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग पर भी ध्यान देंगे। आइए, पहले हम फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि पर ध्यान दें।

पृष्ठभूमि

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री कम से कम दो रूपों में कारागृह से लिखी उसकी अन्य पत्रियों से भिन्न है। पहला, अपने कारावास से लिखी अन्य पत्रियों की अपेक्षा यह पत्री बहुत छोटी है। वास्तव में यह केवल एक ही विषय को संबोधित करती है। दूसरा, यह किसी कलीसिया की अपेक्षा एक व्यक्ति को संबोधित की गई है, अर्थात् यह बहुत ही व्यक्तिगत है। और इसका अर्थ है कि जितना अधिक हम फिलेमोन और इसमें शामिल अन्य व्यक्तियों के बारे में जानेंगे, एवं जितना अधिक हम पौलुस द्वारा संबोधित परिस्थितियों को जानेंगे तो इस पत्री में पाई जाने वाली पौलुस की शिक्षाओं को समझने और आज अपने जीवन में उन्हें लागू करने के लिए उतने ही बेहतर रूप में हम तैयार हो पाएंगे।

हम तीन रूपों में फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। पहला, हम फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में उसके द्वारा संबोधित लोगों को पहचानेंगे। दूसरा, हम उस समस्या को देखेंगे जिसने पौलुस को पत्री लिखने पर प्रेरित किया। और तीसरा, हम समस्या में पौलुस की भागीदारी और मध्यस्थता की जांच करेंगे। आइए, पहले हम इस विषय में शामिल लोगों पर ध्यान दें।

लोग

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में अनेक अलग-अलग लोगों के नामों का उल्लेख है, परन्तु हम उन्हीं पर ध्यान देंगे जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पौलुस द्वारा फिलेमोन से मांगी सहायता में शामिल थे।

पहला हम स्वयं फिलेमोन का परिचय देंगे। दूसरा, हम फिलेमोन के दास उनेसिमुस की ओर मुड़ेंगे। और अंत में, हम कुछ लोगों का उल्लेख करेंगे जो फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच के विषय में पौलुस की सहभागिता के गवाह थे। आइए फिलेमोन, जिसको पौलुस ने पत्री लिखी थी, के साथ आरंभ करें।

फिलेमोन

पौलुस द्वारा फिलेमोन को लिखी पत्री में फिलेमोन के गृहनगर का उल्लेख नहीं है, परन्तु कुलुस्सियों 4:9 दर्शाता है कि फिलेमोन का दास उनेसिमुस कुलुस्से का रहने वाला था। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

> (तुखिकुस) के साथ उनेसिमुस को भी भेजा है जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से है, ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे। (कुलुस्सियों 4:9)

क्योंकि कुलुस्सियों के लिखे जाने के समय उनेसिमुस अपने स्वामी फिलेमोन के साथ रहता था, इसलिए फिलेमोन भी कुलुस्से में ही रहता होगा।

कुलुस्से लिकुस घाटी में लौदीकिया और हियरापुलिस नगरों के निकट स्थित एक काफी छोटा नगर था। लिकुस घाटी एशिया के रोमी प्रान्त के फ्रूगिया में पाई जाती थी जिसे बाद में एशिया माइनर के नाम से जाना गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं फिलेमोन भी कुलुस्से के अन्य विश्वासियों के प्रति सेवकाई करने में सक्रिय रूप से शामिल था। उदाहरण के तौर पर फिलेमोन पद 7 में पौलुस ने कहा कि किस प्रकार फिलेमोन ने अन्य विश्वासियों के हृदयों को हराभरा कर दिया था। पौलुस फिलेमोन के विषय मे इतने उच्च विचार रखता था कि पद 17 में उसने फिलेमोन को सुसमाचार की सेवकाई में अपने सहभागी के रूप में संबोधित किया था। और ऐसा भी हो सकता है कि पद 2 में पौलुस ने फिलेमोन को स्थानीय कलीसिया के मेजबान के रूप में पहचाना हो।

परन्तु इससे बढ़कर, फिलेमोन का पौलुस के साथ महत्वपूर्ण इतिहास रहा होगा जिसने इन दोनों व्यक्तियों के बीच एक मजबूत बंधन प्रदान किया हो। फिलेमोन पद 19 में फिलेमोन को पौलुस द्वारा स्मरण करवाई गई बात को देखें-

> मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है। (फिलेमोन 19)

पूर्णतया संभव है कि पौलुस का अर्थ था कि वह फिलेमोन को विश्वास में लेकर आया था, यद्यपि यह भी संभव है कि उसने किसी न किसी रूप में फिलेमोन के जीवन को हानि से बचाया हो। परन्तु जैसा भी हो, पौलुस का फिलेमोन पर बड़ा ऋण था।

हम कारागृह से पौलुस के छुटकारे के लिए फिलेमोन की प्रार्थनाओं, और कारागृह से छूटने के बाद फिलेमोन के साथ रहने की पौलुस की योजना में उनके संबंध की मजबूती को देख सकते हैं। फिलेमोन पद 22 में हम इस विषय में पौलुस के शब्दों को पढ़ते हैं :

> मेरे लिये उतरने की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा। (फिलेमोन 22)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल यह नहीं दर्शाती है कि पौलुस की फिलेमोन से जान-पहचान किस प्रकार हुई। परन्तु जैसा हमने पिछले अध्यायों में देखा है, यह बताती है कि पौलुस अपनी दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के दौरान फ्रूगिया से होकर गुजरा था। परन्तु जैसा हम देख चुके हैं, पौलुस लिकुस घाटी की कलीसियाओं से परिचित नहीं था। सत्य यह है कि हम नहीं जानते कि किस प्रकार पौलुस और फिलेमोन मित्र बने। परन्तु हम विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि वे एक-दूसरे को भली-भांति जानते थे।

उनेसिमुस

दूसरा व्यक्ति जिसका परिचय हमें देना चाहिए, वह है उनेसिमुस। फिलेमोन पद 16 के अनुसार उनेसिमुस फिलेमोन का दास था, यद्यपि यह स्पष्ट नहीं है कि वह किस प्रकार का दास था और किस रूप में उसने फिलेमोन की सेवा की थी।

पहली सदी के दौरान रोमी साम्राज्य में दासता एक सामान्य बात थी। साम्राज्य के एक-तिहाई लोग किसी न किसी प्रकार के दास थे। अमीर लोग दासों को रखा करते थे और उनका स्तर विशेषत: उनके स्वामियों के स्तर पर निर्भर करता था।

कुछ रोमी दास अशिक्षित थे और छोटे-मोटे निम्न कार्य किया करते थे, परन्तु दूसरे शिक्षित थे- कुछ काफी शिक्षित थे और अपनी शिक्षा के स्तर के अनुसार कार्य किया करते थे। वे गृह-प्रबंधक, लेखाकार, शिक्षक या किसी भी आवश्यक कार्य को करने वाले हुआ करते थे।

यद्यपि दासत्व में रहने की अपेक्षा स्वतंत्र रहना अधिक पसंद किया जाता था, परन्तु यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि अनेक गरीब लोगों ने दिन-प्रतिदिन के भोजन और शरण की निश्चितता को पाने के लिए स्वयं को दासत्व में बेच दिया था। और हम ऐतिहासिक प्रलेखों के माध्यम से जानते हैं कि आरंभिक कलीसिया में कुछ मसीहियों ने भलाई के कार्यों, जैसे गरीबों को भोजन खिलाना, के लिए धन एकत्रित करने हेतु स्वयं को दासत्व में बेच दिया था।

सामान्यत: अपने दासों पर स्वामियों के अधिकार संपूर्ण नहीं होते थे। रोमी कानून ने दासों को धन कमाने और सम्पत्ति रखने का और यहां तक कि स्वयं के दास रखने एवं अपने स्वामियों से अपनी स्वतंत्रता को खरीदने की अनुमति दी थी। और इन अधिकारों से बढ़कर अनेक दासों को दास्यमुक्ति मिल जाती थी जब वे तीस वर्ष के हो जाते थे, यद्यपि कानून इसके लिए विवश नहीं करता था।

क्योंकि उनेसिमुस फिलेमोन का दास था, इसलिए वह फिलेमोन के परिवार का सदस्य था। परन्तु अपने स्वामी के विपरीत उनेसिमुस विश्वासी नहीं था, कम से कम शुरु में तो नहीं। परन्तु पौलुस की सहायता पाने के लिए उनेसिमुस द्वारा फिलेमोन के घर को छोड़ने के बाद पौलुस ने मसीह में उसे विश्वास करने के लिए प्रेरित किया, और उससे बेहद प्रेम किया। पौलुस ने यह लिखते हुए फिलेमोन पद 10-16 में उनेसिमुस के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया :

> **मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से विनती करता हूँ... जो मेरे हृदय का टुकड़ा है... वह मेरा प्रिय है। (फिलेमोन 10-6)**

पौलुस ने उनेसिमुस का उल्लेख अपने "पुत्र" के रूप में किया क्योंकि उसी ने मसीह में विश्वास करने को उसे प्रेरित किया था और क्योंकि पौलुस के मन में उसके लिए पिता का प्रेम विकसित हो गया था।

इन दो मुख्य चरित्रों के अतिरिक्त, पौलुस ने फिलेमोन को लिखी अपनी पत्री में कुछ अन्य कुलुस्सियों का उल्लेख भी किया था, जैसे अफफिया, अरखिप्पुस और इपफ्रास। इन सब लोगों का फिलेमोन के साथ भी रिश्ता था। पौलुस ने शायद उनका उल्लेख इस आशा के साथ किया होगा कि वे उसके परिचित गवाह ठहरेंगे और उनेसिमुस के लिए उसके आग्रह में सहायता करेंगे।

गवाह

पौलुस ने पत्री के संबोधन, जो फिलेमोन पद 1 और 2 में पाया जाता है, में अफफिया और अरखिप्पुस का उल्लेख किया था :

> पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। और बहिन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और तुम्हारे घर की कलीसिया के नाम। (फिलेमोन 1-2)

पौलुस की "बहन" के रूप में अफफिया का उल्लेख केवल यही दर्शाता होगा कि वह विश्वासी स्त्री थी। परन्तु क्योंकि उसे शेष कलीसिया से अधिक महत्व दिया गया है, इसलिए यह संभव है कि वह फिलेमोन के परिवार की सदस्या थी, शायद उसकी पत्नी। अरखिप्पुस शायद कलीसिया का मेजबान हो, यद्यपि इस पद को पढ़ने पर यह समझना भी संभव है कि कलीसिया फिलेमोन के घर पर ही मिलती थी। चाहे जैसा भी हो, पत्री की प्रकृति को समझते हुए ऐसा संभव है कि उसका ऐसे व्यक्ति के रूप में उल्लेख किया गया है जिसका फिलेमोन पर कुछ प्रभाव हो, चाहे स्थानीय पासवान के रूप में या फिलेमोन के परिवार के सदस्य के रूप में।

इपफ्रास के विषय में आप हमारे पिछले अध्यायों से स्मरण करेंगे कि उसी ने कुलुस्से की कलीसिया की स्थापना की थी और लिकुस घाटी की कलीसियाओं ने उसे कारागृह में पौलुस की सेवा करने के लिए भेजा था। क्योंकि वह उस समय पौलुस के साथ था, इसलिए वह कुलुस्से में स्थानीय सेवक के रूप में कार्य नहीं कर पाया था। परन्तु कलीसिया में उसके पद ने उसके सुझाव को महत्वपूर्ण बना दिया था। अतः, पौलुस ने इपफ्रास की ओर से विशेष अभिनंदन को शामिल किया था। फिलेमोन पद 23 और 24 में पाए जाने वाले इन शब्दों को सुनें :

> इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है। और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं इन का तुझे नमस्कार। (फिलेमोन 23-24)

ध्यान दें कि इपफ्रास की ओर से अभिनंदन को पहले दर्शाया गया है, और कि यह दूसरों की अपेक्षा लम्बा और अलग भी है। इपफ्रास पर दिया गया यह बल फिलेमोन को यह सूचित करता है कि इपफ्रास का अर्थ अभिनंदन भेजने से कहीं अधिक था; उसकी इस बात को निश्चित करने में गहरी रूचि थी कि फिलेमोन पौलुस के पत्र का उचित रूप से प्रत्युत्तर दे।

समस्या

पौलुस की पत्री के विषय से सबसे करीब से संबंधित लोगों का परिचय देने के पश्चात् अब हम समस्या को संबोधित करने की स्थिति में हैं। ऐसी क्या गड़बड़ हो गई थी कि इसमें पौलुस को हस्तक्षेप करना पड़ा?

यह कोई राज नहीं है कि कुछ कार्यकर्ता अच्छे कार्य करने वाले नहीं होते, कि कुछ नौकर अच्छे नौकर नहीं होते, और कि कुछ लोग अपनी जिम्मेवारियों को स्वीकार करने और अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने से इनकार कर देते हैं। और दुर्भाग्यवश, ऐसा प्रतीत होता है कि उनेसिमुस ऐसा ही एक व्यक्ति था। और उसकी असफलताएं, चाहे आलसपूर्ण, लापरवाह या विद्वेषपूर्ण होने के कारण हों, उन्होंने उसके स्वामी फिलेमोन को इतना अधिक क्रोधित कर दिया था कि उनेसिमुस फिलेमोन से मिलने वाले दण्ड से बहुत डर गया था। और इसलिए इस दण्ड से बचने के लिए उनेसिमुस ने फिलेमोन का घर छोड़ दिया था। फिलेमोन पद 11 में उनेसिमुस के विषय में फिलेमोन को लिखे पौलुस के शब्दों पर ध्यान दें :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न था। (फिलेमोन 11)

यहां पर शब्दों का खेल है। "उनेसिमुस" नाम को यूनानी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ होता है "उपयोगी" या काम का"। परन्तु पौलुस ने यहां कहा कि उनेसिमुस किसी काम का साबित नहीं हुआ था। शब्दों के इस खेल के द्वारा पौलुस ने फिलेमोन को यह समझाया कि उनेसिमुस वास्तव में निरर्थक और अनुपयोगी दास था।

इससे बढ़कर, फिलेमोन पद 18 के अनुसार उनेसिमुस ने वास्तव में फिलेमोन को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाया होगा। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

> और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। (फिलेमोन 18)

अनेक व्याख्याकार इस पद को यह समझने के लिए लागू करते हैं कि उनेसिमुस ने फिलेमोन से कुछ चुरा लिया था जो घरेलू दासों के बीच एक सामान्य अपराध था। परन्तु उनेसिमुस ने शायद दूसरे तरीकों से भी फिलेमोन का नुकसान करवाया होगा, जैसे कि घर के स्रोतों का खराब प्रबंधन, किसी सम्पत्ति का नाश या उसे खो देना आदि के द्वारा।

जैसे भी हो, क्रोधित होना फिलेमोन का अधिकार था, और उनेसिमुस के पास फिलेमोन से डरने का उचित कारण भी था। रोमी कानून के तहत स्वामियों के पास दासों को कड़ा दण्ड देने का अधिकार था, वे उन्हें कड़ी शारीरिक सजा भी दे सकते थे। उनेसिमुस फिलेमोन के क्रोध से इतना चिंतित हो गया था कि वह भय से भाग खड़ा हुआ।

फिलेमोन पद 15 में पौलुस ने इस स्थिति की ओर संकेत किया जहां उसने ये शब्द लिखे :

> क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। (फिलेमोन 15)

स्पष्टत:, फिलेमोन स्वयं नहीं चाहता था कि उनेसिमुस छोड़ के जाए, और शायद वह उसके जाने से प्रसन्न भी नहीं था। परन्तु पौलुस ने सुझाव दिया था कि इस परिस्थिति की अनुमति देने में परमेश्वर के पास एक सकारात्मक कारण था। अलगाव के इस समय के दौरान परमेश्वर ने उनेसिमुस को बदल दिया था जिससे वह फिलेमोन के लिए बहुत काम का बन गया।

अब रोमी साम्राज्य में, वे दास जो इस प्रकार अपने स्वामियों का घर छोड़ देते हैं, आवश्यक नहीं वे कि भगोड़े ही हों। यदि वे पुन: न लौटने के इरादे से भागे थे तो ही वे भगोड़े माने जाते थे। परन्तु कानून ने दासों को अस्थाई रूप से अपने स्वामियों का घर छोड़ने की अनुमति दी थी ताकि वे अपने लिए वकील या मध्यस्थ ढूंढ़ लें जो उनके स्वामियों से उनका मेल कराए। अनेक रोमी विधिशास्त्रियों ने इस बात को लिखा है। उदाहरण के तौर पर विवियानुस, जिसने 98 और 117 ईस्वी के बीच लिखा था, ने इस प्रकार तर्क दिया :

> यदि एक दास अपने स्वामी को छोड़कर अपनी माता के पास वापिस लौट आए, तो यह प्रश्न कि क्या वह भगोड़ा है, विचारयोग्य है; यदि वह स्वयं को छिपाने के इरादे से और अपने स्वामी के पास पुन: न लौटने के इरादे से भागा है, तो वह भगोड़ा है; परन्तु वह तब भगोड़ा नहीं है यदि वह यह प्रयास करता है कि उसकी कुछ गलतियों को उसकी माता की विनतियों के कारण कम किया जा सकता है।

इसी प्रकार पहली सदी के आरंभ में लिखते हुए प्रोक्यूलस ने यह कहा था :

> वह दास भगोड़ा नहीं है जो यह देखकर कि उसका स्वामी उसे शारीरिक रूप से दण्ड देना चाहता है, अपने मित्र के पास जाए और उससे अपने लिए आग्रह करने को कहे।

और पौलुस (प्रेरित पौलुस नहीं) ने दूसरी सदी के अंत में यह टिप्पणी दी :

> वह दास जो मध्यस्थता का आग्रह करने के लिए अपने स्वामी के मित्र के पास जाता है, वह भगोड़ा नहीं है।

ये कानूनी टिप्पणियां दर्शाती हैं कि रोमी कानून ने दासों को अपने स्वामियों के पास से भाग जाने की अनुमति दी थी, यदि वे अपनी स्वतंत्रता पाने के लिए नहीं परन्तु किसी की सहायता प्राप्त करने के लिए भाग रहे हों। अत: यदि उनेसिमुस इसलिए भागा था कि वह फिलेमोन और अपने बीच पौलुस को वकील और मध्यस्थ बनाए, तो वह भगोड़ा नहीं था।

सारांश में, फिलेमोन के परिवार में पहली समस्या तो यह थी कि उनेसिमुस ने फिलेमोन का नुकसान करवाया था और इस समस्या में उनेसिमुस और फिलेमोन के बीच का तनाव भी जुड़ गया था, जिसमें शायद फ्रिलेमोन का क्रोध और उनेसिमुस को दण्ड देने की इच्छा एवं उनेसिमुस का भय भी शामिल था। और अंत में, इसका परिणाम हुआ कि उनेसिमुस फिलेमोन के घर से भाग गया। फिलेमोन ने शायद यह सोच लिया होगा कि उनेसिमुस भगोड़ा था। परन्तु उनेसिमुस के सही इरादे अभी तक छिपे हुए थे।

मध्यस्थता

अब जब हमने फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में संबोधित लोगों और समस्या को पहचान लिया है, तो हमें फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच पौलुस की मध्यस्थता की ओर मुड़ना चाहिए। अब जब हम पौलुस की मध्यस्थता की ओर मुड़ते हैं, तो हम दो विषयों को देखेंगे- पहला, उनेसिमुस की विनती कि पौलुस उसका वकील बन जाए; और दूसरा उनेसिमुस का वकील बनने के लिए पौलुस की सहमति। आइए, पहले हम पौलुस से की गई उनेसिमुस की विनती की ओर मुड़ें।

उनेसिमुस की विनती

इस समय के दौरान, पौलुस कारागृह में था। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में कहा था, ऐसा संभव है कि वह रोम के कारावास में था, यद्यपि यह भी संभव है कि वह कैसरिया मरितिमा में हो। परन्तु चाहे वह रोम में हो या कैसरिया मरितिमा में, वह कुलुस्से से बहुत दूर था जहां फिलेमोन रहता था।

कुछ विद्वानों के अनुसार उनेसिमुस द्वारा वकील या मध्यस्थ के रूप में पौलुस को ढूंढ़ने के प्रयास में यह दूरी बहुत ही लम्बी थी। फलस्वरूप, वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उनेसिमुस फिलेमोन से दूर एक नया जीवन आरंभ करने का प्रयास कर रहा था और पौलुस से उसकी भेंट संयोगवश हो गई थी।

अब हमें मान लेना चाहिए कि पवित्रशास्त्र हमें कुछ नहीं बताता है कि जब उनेसिमुस फिलेमोन से भागा तो उसके मन में क्या था, और न ही यह बताता है कि वह कारागृह में पौलुस से किस प्रकार मिला। परन्तु फिर भी यह हमें कुछ विवरण अवश्य प्रदान करता है जो दर्शाते हैं कि उनेसिमुस ने पौलुस को अपना वकील बनाने के लिए ढूंढ़ने का प्रयास किया था।

पहला, उनेसिमुस उस नगर को गया जहां पौलुस कारावास में था। और उसे पूरी तरह से पता होगा कि पौलुस वहीं रहता था क्योंकि कुलुस्से की कलीसिया ने कारागृह में इपफ्रास को पौलुस की देखभाल के लिए भेजा था। कुलुस्सियों 4:12-13 में हम इस विषय पर पढ़ते हैं जहां पौलुस ने ये शब्द लिखे :

> इपफ्रास जो तुम में से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम से नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो। मैं उसका गवाह हूँ, कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न करता रहता है। (कुलुस्सियों 4:12-13)

क्योंकि उनेसिमुस कुलुस्से का था, और क्योंकि उसका स्वामी फिलेमोन कलीसिया का प्रमुख व्यक्ति था, उनेसिमुस शायद जानता था कि पौलुस कहां था। और इस जानकारी के साथ, उनेसिमुस ने अपने लक्ष्य के रूप में उसी नगर को चुना।

इसके अतिरिक्त, नगर में एक बार उनेसिमुस की पौलुस से भेंट हुई थी। पौलुस गृहकैद में बंद था जिससे वह आजादी से बाहर घूम-फिर नहीं सकता था। अत: यह कल्पना करना कठिन है कि उनेसिमुस उससे संयोगवश ही मिला होगा। ऐस संभव है कि उनेसिमुस एक उद्देश्य के साथ पौलुस से मिलने गया था।

अंत में, पौलुस ने फिलेमोन को पत्र तभी लिखा जब उनेसिमुस पौलुस का अतिप्रिय बन गया था। फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में उसने दर्शाया कि वह उनेसिमुस को मसीहियत में ले आया है, और कि उनेसिमुस ने कारागृह में पौलुस की सेवा की है। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने उनेसिमुस का बचाव तभी किया जब उनेसिमुस ने स्वयं को पौलुस के समक्ष प्रमाणित कर दिया था। क्योंकि उनेसिमुस पौलुस के साथ पर्याप्त समय तक रहा कि वह पौलुस की वकालत को प्राप्त कर सके, तो यह दर्शाता है कि उसका अपनी परिस्थिति में पौलुस की सहायता प्राप्त करने का पूरा इरादा था।

उनेसिमुस की इस विनती पर चर्चा करने के बाद कि पौलुस उसका वकील बन जाए, हम उनेसिमुस के स्वामी फिलेमोन के समक्ष उसका बचाव करने की पौलुस की सहमति को देखने के लिए तैयार हैं।

पौलुस का समझौता

उनेसिमुस और फिलेमोन के बीच मध्यस्थता करने के लिए पौलुस एकदम से सहमत नहीं हुआ था। आखिरकार, उनेसिमुस एक अविश्वासी और अनुपयोगी दास था, और फिलेमोन एक भला और प्रेमी मनुष्य था। फिलेमोन को क्रोधित होने और उनेसिमुस को दण्ड देने का पूरा अधिकार था, और ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उसने अनुचित या अन्यायी रूप से ऐसा करने की कोई योजना बनाई हो। फिलेमोन अपने अधिकार की सीमाओं में ही उनेसिमुस को दण्ड देने वाला था। अत: यदि पौलुस को उनेसिमुस का बचाव करना था तो यह केवल दया के आधार पर ही होना था। और इससे पहले कि वह उनेसिमुस के लिए दया की याचना करे तो उसे इस बात से आश्वस्त होना आवश्यक था कि उनेसिमुस ने वास्तव में पश्चाताप कर लिया था।

इस विषय में पौलुस की आरंभिक अरूचि प्रशंसायोग्य है। आखिरकार, गलत कार्य करने वालों को केवल इसलिए क्षमा प्रदान करना क्योंकि वे दण्ड से भयभीत हैं, मूर्खता होगी। इस विषय में रोमियों 13:4 में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दें, जहां उसने इस रूप में लोक शासकों के विषय में बात की है :

> क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए ही परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तुम बुरा कार्य करते हो, तो भयभीत हो क्योंकि वह व्यर्थ ही तलवार नहीं रखता। क्योंकि अधिकारी परमेश्वर का बदला लेने वाला सेवक है, जो कुकर्मियों पर परमेश्वर का प्रकोप डालता है। (रोमियों 13:4)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यही सिद्धांत उन अनेक संबंधों में लागू होता है जिसमें अधिकार संरचनाएं शामिल होती हैं, जैसे कि अभिभावकों और बच्चों के बीच और पहली सदी के रोमी साम्राज्य की सामाजिक संरचना जैसे स्वामी और दास में भी। परमेश्वर द्वारा निर्धारित अधिकारी उचित दण्ड देते हैं क्योंकि ऐसा करना सही बात है।

और इसलिए यह उचित और सामान्य बात थी कि जब दास या सेवक अपने स्वामी के मित्र से सहायता की याचना करता था तो वह मित्र इस बात से आश्वस्त हुए बिना कि क्या ऐसा करना उचित है, स्वामी को विवश नहीं करता था।

तुलना के लिए, आइए एक ऐतिहासिक उदाहरण को देखें जहां एक अन्य रोमी दास ने सहायता के लिए अपने स्वामी के मित्र से विनती की। 111 ईस्वी से थोड़ा पहले रोमी सीनेटर प्लिनी द यंगर ने एक दास के लिए सबिनीयानुस को पत्र लिखा जो उसके लिए काम करता था, और सदियों से यह पत्र हमारे लिए संभालकर रखा गया है। प्लिनी के पत्र के इस उद्धरण को पढ़ें :

> तुम्हारा दास जिससे तुमने कहा था कि तुम क्रोधित हो, मेरे पास आया है और उसने मेरे पांव पकड़े, और मुझसे इस प्रकार लिपट गया जैसे मैं तुम हूँ। आंसू बहा-बहाकर उसने मुझसे सहायता मांगी... उसने मुझे अपने उचित पश्चाताप से आश्वस्त कर दिया है। मैं समझता हूँ कि वह सुधर गया है, क्योंकि उसे महसूस हो गया है कि उसने गलत किया था... उसकी जवानी, उसके आंसुओं और अपने स्वयं के दयालु हृदय के प्रति कुछ रिआयत कर, एवं उसे और न ही स्वयं को कोई यातना दे।

उनेसिमुस के समान सबिनीयानुस का यह दास भी सहायता पाने के लिए अपने स्वामी के मित्र की ओर मुड़ा। और पौलुस के समान प्लिनी तब तक मध्यस्थता करने को तैयार नहीं हुआ जब तक उस दास ने अपने पश्चाताप और सही इच्छा को प्रमाणित नहीं कर दिया था।

अत: यह कल्पना करना सही है कि आरंभ में उनेसिमुस पौलुस के साथ अपनी सही इच्छा के प्रति उसे आश्वस्त करने के लिए ठहरा था। और इस समय के दौरान पौलुस ने उनेसिमुस के समक्ष सुसमाचार का प्रचार किया, और पवित्र आत्मा उसे मसीह में विश्वास की ओर लेकर आया। और क्योंकि एक सच्चा हृदयपरिवर्तन पापों के पश्चाताप के साथ होता है, तो यह निष्कर्ष निकालना सही है कि उनेसिमुस ने अपने उन सभी पापों से पश्चाताप किया जिन्होंने फिलेमोन को क्रोधित कर दिया था। और मसीह में मिले अपने नए जीवन के साथ उनेसिमुस नया मनुष्य बन गया था और उसने स्वयं को कारागृह में प्रेरित की सेवा करने में समर्पित कर दिया था। और बदले में पौलुस ने परमेश्वर की इस नई संतान से स्नेह किया और एक पुत्र के समान उससे प्रेम करने लगा।

एक बार जब उनेसिमुस ने पौलुस का साथ पा लिया तो यह उचित था कि वह फिलेमोन के पास लौटै। अत: उनेसिमुस पौलुस की वकालत या मध्यस्थता का पत्र लेकर कुलुस्से की ओर रवाना हुआ। फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री के अनुसार, कानूनी रूप से उनेसिमुस भगोड़ा बने बिना पौलुस के साथ रह सकता था। परन्तु नैतिक रूप से यह सर्वोत्तम समाधान नहीं होता। बल्कि, दया और मेलमिलाप के मसीही मूल्यों ने फिलेमोन के पास उसके लौटने की मांग की।

इसका कारण फिलेमोन पद 12-16 में पाया जा सकता है, जहां पौलुस ने इन शब्दों को लिखा :

> जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैं ने उसे तेरे पास लौटा दिया है। उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था ... पर मैं ने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से हो ... जो मेरा तो विशेष प्रिय है ही, पर अब शरीर में और प्रभु में भी, तेरा भी विशेष प्रिय हो। **(फिलेमोन 12-16)**

पौलुस ने उनेसिमुस को फिलेमोन के पास वापिस भेजा क्योंकि वह फिलेमोन से जबरदस्ती नहीं बल्कि स्वेच्छा से उपहार चाहता था, और क्योंकि वह चाहता था कि फिलेमोन और उनेसिमुस मसीह में भाइयों के समान मेलमिलाप कर लें।

संभावित रूप से, उनका मेलमिलाप आमने-सामने मिलकर ही पूरा होगा जिसके दौरान उनेसिमुस पश्चाताप करे और फिलेमोन की क्षमा को प्राप्त करे, और जिसमें फिलेमोन कृपा के साथ उनेसिमुस को क्षमा और स्वीकार करे। और पौलुस द्वारा फिलेमोन की एक बहुत ही प्रेमी मसीही के रूप में प्रशंसा, और उनेसिमुस के लिए पौलुस की मजबूत वकालत को ध्यान में रखते हुए, ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने इसी परिणाम की अपेक्षा की थी।

संरचना और विषय-वस्तु

अब जब हमने फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है, तो हम पौलुस की विशिष्ट विधि एवं तर्कों, जिनका प्रयोग उसने उनेसिमुस और फिलेमोन के बीच मध्यस्थता करने के लिए किया, को देखते हुए उसकी संरचना और विषय-वस्तु की जांच करने के लिए तैयार हैं।

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री कई रूपों में सबसे अलग है। पहली बात तो यह पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस की एकमात्र पत्री है जो शिक्षण पर केन्द्रित नहीं है। फिलेमोन में पौलुस ने एक शिक्षक की अपेक्षा वकील के रूप में लिखा। दूसरी बात, लगभग हर दूसरे पत्र में, पौलुस ने अपने प्रेरितिक अधिकार को संबोधित किया, और आदेश दिया कि कार्य उसकी आज्ञा के अनुसार हो। परन्तु फिलेमोन में उसने अपने मित्र को जानबूझ कर आज्ञा न देने, बल्कि सुसमाचार के सहकर्मी के रूप में उसको लिखने और उसकी सहायता मांगने का निर्णय किया। और इसके अतिरिक्त, फिलेमोन की पत्री पौलुस की सबसे व्यक्तिगत पत्री थी जिसमें उसने उनेसिमुस और फिलेमोन दोनों के लिए अपनी चिंताओं को व्यक्त किया और उनकी मित्रता पर आधारित विनतियां की।

सारांश में, फिलेमोन में हम परमेश्वर के एक विनम्र व्यक्ति को क्रिया में देखते हैं, जो अपनी जिम्मेवारियां पूरी करता है, और दूसरों से लेखा लेता है। और इसलिए जब हम इस पत्री के विवरणों का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम पौलुस के मसीही स्वभाव और क्रियाओं पर ध्यान देंगे कि किस प्रकार उसने उन आदर्शों का पालन किया जिनका वर्णन उसने कारागृह से लिखी दूसरी पत्रियों में किया था।

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषय-वस्तु की हमारी चर्चा पत्री की रूपरेखा का अनुसरण ही करेगी, जिसका आरंभ अभिवादन के साथ होगा जो पद 1-3 में पाया जाता है, फिर यह पद 4-7 में फिलेमोन के लिए पौलुस के आभार-प्रदर्शन, और पद 8-21 में उनेसिमुस के लिए पौलुस की विनती के साथ आगे बढ़ेगी, और अंत में पद 22-25 में अंतिम अभिनंदनों के साथ इसकी समाप्ति होगी। आइए, पद 1-3 में अभिवादन पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

अभिवादन

अभिवादन, जो पद 1-3 में पाया जाता है, पौलुस को मुख्य लेखक के रूप में पहचानता है, और कहता है कि यह पत्री तीमुथियुस की ओर से भी है। इसमें एक संबोधन भी शामिल है जो फिलेमोन को इस पत्री के मुख्य प्राप्तकर्ता के रूप में पहचानता है और अन्य कई लोगों का उल्लेख करता है जो इस पत्री की साक्षी देते हैं- जैसे अफफिया, अरखिप्पुस, और स्थानीय कलीसिया जिसका फिलेमोन सदस्य था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस जानता था कि वह फिलेमोन से बहुत बड़ा आग्रह कर रहा था और यह भी कि फिलेमोन के लिए उसके इस आग्रह को स्वीकार करना मुश्किल हो सकता है। अत:, फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच के मामले को गुप्त बने रहने देने की अपेक्षा पौलुस ने फिलेमोन के परिवार और उसकी कलीसिया को उसके द्वारा उनेसिमुस की वकालत के साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया। कोई संदेह नहीं कि उसे आशा थी कि साथी विश्वासियों की अनेक चौकस आँखें फिलेमोन को उनेसिमुस के प्रति दयालु बनने के लिए और भी अधिक उत्साहित करेंगी। अभिवादन संक्षिप्त आशीष के रूप में स्तरीय अभिनंदन के साथ समाप्त होता है।

आभार-प्रदर्शन

अभिवादन के पश्चात हम पद 4-7 में फिलेमोन के प्रति पौलुस के आभार-प्रदर्शन को देखते हैं। पौलुस अपनी पत्री के इस स्थान पर सामान्यत: आभार-प्रदर्शन का एक खण्ड शामिल करता था।

पौलुस ने विशेषकर कलीसिया के लिए अपने प्रेम के बारे में लिखा, और कुलुस्से में साथी विश्वासियों को फिलेमोन के द्वारा आशीष प्रदान करने में प्रभु को धन्यवाद दिया। फिलेमोन पद 5-7 में पौलुस ने इन शब्दों के साथ फिलेमोन की प्रशंसा की :

> मैं तेरे उस प्रेम. . . की चर्चा सुनता हूँ जो सब पवित्र लोगों... के साथ है। मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिये, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं। (फिलेमोन 5-7)

पौलुस ने यह नहीं कहा कि फिलेमोन ने क्या किया था, परन्तु उसने यह कहा कि वह पवित्र लोगों के मन को हराभरा करने वाला था। शायद फिलेमोन ने उनकी आर्थिक सहायता की हो, या उनके लिए कुछ सेवाकार्य किए हों, या फिर कुछ और लाभकारी कार्य उनके लिए किए हों। चाहे जो भी हो, फिलेमोन ने यह अच्छी रीति से और भले हृदय से किया था। और क्योंकि उनेसिमुस कलीसिया का भाग बन गया था, इसलिए पौलुस ने फिलेमोन से अपेक्षा की थी कि वह उससे भी वैसा ही प्रेम दर्शाए।

कुलुस्सियों 3:12-14 में पौलुस की शिक्षाओं के प्रकाश में फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच की स्थिति पर विचार करें, जहां पौलुस ने ये शब्द लिखे :

> इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाई जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है, बान्ध लो। (कुलुस्सियों 3:12-14)

पौलुस ने कुलुस्सियों से, और फिलेमोन से भी, यह स्मरण रखने को कहा था कि परमेश्वर सब विश्वासियों से प्रेम करता है और उन्हें क्षमा कर देता है। और उसने उन्हें गलती करने पर एक दूसरे को धैर्य से सह लेने और बदला लेने की अपेक्षा क्षमा कर देने के द्वारा उसी प्रेम को दर्शाने के लिए उत्साहित किया था।

फिलेमोन और उनेसिमुस दोनों के लिए इसके प्रयोग को देखना कठिन नहीं है। उनेसिमुस ने फिलेमोन के साथ गलत किया था- पौलुस ने इसकी पुष्टि की कि यह सच था। फिर भी उसने फिलेमोन से कहा कि वह वैसा ही व्यवहार करे, उनेसिमुस से वैसा ही प्रेम करे जैसा वह अन्य विश्वासियों से करता है। उसने फिलेमोन से कहा कि गलत व्यवहार सहने के बाद भी वह धैर्य से उसे सह ले, और उनेसिमुस को

सजा देने की अपेक्षा उसे माफ कर दे। फिलेमोन के प्रेम की पुष्टि करते हुए पौलुस ने उसे अपने व्यवहार में एक सा बने रहने, और उनेसिमुस के विषय में अपने क्रोध को प्रेम पर विजय न पाने देने को उत्साहित किया।

विनती

आभार-प्रदर्शन के खण्ड के पश्चात् पौलुस ने पद 8-21 में फिलेमोन के समक्ष अपनी विनती को रखा। विनती पत्री के मुख्य उद्देश्य को प्रस्तुत करती है- फिलेमोन के समक्ष उनेसिमुस के लिए वकालत करना। हम निम्नलिखित छः तत्वों में इसे विभाजित करने के द्वारा गहराई से इस विनती का अध्ययन करेंगे-

- • पद 8-10 में वकील के रूप में पौलुस की भूमिका का वर्णन;
- • पद 11-13 में विनती करने वाले के रूप में उनेसिमुस की भूमिका का वर्णन;
- • पद 14 में स्वामी के रूप में फिलेमोन की भूमिका का वर्णन;
- • पद 15-16 में ब्रह्मांड के विधानीय शासक के रूप में परमेश्वर की भूमिका का वर्णन;
- • पद 17-20 में पौलुस की विनती;
- • और पद 21 में पौलुस के भरोसे का कथन कि उसकी विनती स्वीकार कर ली जाएगी;

आइए, वकील के रूप में पौलुस की भूमिका के वर्णन की ओर मुड़ने के द्वारा आरंभ करें।

वकील के रूप में पौलुस

फिलेमोन पद 8-10 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा हियाव तो है, कि जो बात ठीक है, उस की आज्ञा तुझे दूं। तौभी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिये कैदी हूँ, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूं। मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से विनती करता हूँ। **(फिलेमोन 8-10)**

क्योंकि पौलुस मसीह का प्रेरित था, उसके पास अधिकार था कि वह फिलेमोन को उचित कार्य करने की आज्ञा दे। परन्तु इसकी अपेक्षा, उसने फिलेमोन को इस प्रकार से लिखा जिसने फिलेमोन की दया और परवाह को प्रकट किया।

इस अनुच्छेद में पौलुस ने सहायता की आवश्यकता में पड़े कमजोर और वृद्ध व्यक्ति के रूप में बात की। और उन लोगों के लिए जो अन्य पत्रियों में उसकी कड़ी लेखन शैली से परिचित हैं, यह काफी असामान्य प्रतीत हो सकता है। आखिरकार, पौलुस ने सामान्यत: मांग की थी कि लोग उसके अधिकार का सम्मान करें और उसकी शिक्षा के प्रति समर्पित हों। क्या वह कोमल हृदय वाले फिलेमोन से चतुराई से काम निकालने का प्रयास कर रहा था? नहीं। यह केवल पौलुस के सच्चे व्यक्तित्व का दूसरा पहलू है जिसे हम प्राय: उसकी दूसरी पत्रियों में नहीं देखते हैं।

सुनें 2कुरिन्थियों 10:10 में किस प्रकार के पौलुस के आलोचकों ने पौलुस के इस दूसरे पहलू के बारे बात की थी :

> क्योंकि कहते हैं, कि उस की पत्रियां तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब देखते हैं, तो वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का जान पड़ता है। **(2कुरिन्थियों 10:10)**

पौलुस के आलोचकों ने स्वयं को अपनी पत्रियों में प्रभावशाली, परन्तु व्यक्तित्व में नम्र और निरहंकारी होने के लिए पौलुस की आलोचना की। व्यक्तित्व में पौलुस काफी शांत हो सकता है। और इससे हमें चकित नहीं होना चाहिए। आखिरकार, पौलुस निरन्तर मसीह के समान बनने का प्रयास करता रहा, और वह अच्छी तरह से जानता था कि कब प्रभावशाली और कब दीन और नम्र बनना है।

फिलिप्पियों 2:5-8 में पौलुस की शिक्षाओं पर ध्यान दें :

> जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने... अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और... अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। **(फिलिप्पियों 2:5-8)**

यीशु मसीह, देहधारी परमेश्वर, एक प्रभावशाली शिक्षक था। परन्तु उसने भी स्वयं को इतना दीन करके रचित मनुष्यों के अधीन कर दिया कि वे उसे अधम या निम्न आपराधिक दण्ड दें। तो यह उपयुक्त है कि उसका प्रेरित कभी-कभी बलशाली रूप में तो कभी-कभी जरुरतमंद और शांत बनके उसी के मार्गों पर चले।

फिलेमोन से काम निकलवाने के लिए पौलुस को किसी चतुराई की जरुरत नहीं थी- वह एक प्रेरित था। अगर चाहता तो वह फिलेमोन की आज्ञाकारिता की मांग कर सकता था। और यदि उसने ऐसा किया होता तो शायद फिलेमोन उसकी अनुपालना करता। परन्तु पौलुस चाहता था कि फिलेमोन इस परिस्थिति का प्रत्युत्तर सच्चे मसीही प्रेम के साथ दे। अत: उसने फिलेमोन के हृदय से अपील की कि वह कारागृह में बंद वृद्ध व्यक्ति पर दया करे, और मसीह में नए नए आए भाई पर भी जिसने उसकी सेवा की है। और इस प्रकार के एक दृष्टिकोण के साथ पौलुस ने उनेसिमुस के लिए अपनी वकालत का परिचय दिया।

स्वयं को उनेसिमुस के वकील के रूप में परिचित करवाने के बाद पद 11-13 में पौलुस ने स्वयं उनेसिमुस के बारे में बात की। उसने उनेसिमुस और पौलुस के बीच संबंध के विवरणों को भी स्पष्ट किया जिसने फिलेमोन के समक्ष उनेसिमुस की विनती को प्रस्तुत करने में प्रेरित की अगुवाई की।

विनती करने वाले के रूप में उनेसिमुस

फिलेमोन पद 11-13 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखा :

> (उनेसिमुस) तो पहिले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है... उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था कि तेरी ओर से इस कैद में जो सुसमाचार के कारण हैं, मेरी सेवा करे। **(फिलेमोन 11-13)**

जिस उनेसिमुस का वर्णन पौलुस ने यहां किया वह उस व्यक्ति से बहुत अलग था जो उसके पास मध्यस्थ बनने के आग्रह के साथ आया था।

उनेसिमुस एक अनुपयोगी दास था। परन्तु उसने अब मसीह पर भरोसा कर लिया था; उसने अपने पापों से पश्चाताप कर लिया था, और अपने मार्गों को सुधार लिया था, और कारागृह में पौलुस की देखभाल करने के सच्चे प्रयास के साथ उसने अपने अच्छे विश्वास को भी दर्शाया था। और क्योंकि पौलुस जानता था कि फिलेमोन एक प्रेमी मसीही है, उसे फिलेमोन से अपेक्षा थी कि वह उनेसिमुस द्वारा मसीह को ग्रहण किए जाने के समाचार पर प्रसन्न होगा, और कि वह उसके अपराधों को वैसे ही क्षमा कर देगा जैसे कि वह उसके विरुद्ध पाप करने वाले किसी भी अन्य मसीही को करता।

पौलुस ने फिलेमोन पद 11-13 में शब्दों का खेल खेला जिसने उनेसिमुस में आए परिवर्तन पर बल दिया। विशेषत:, ख्रेस्तोस शब्द ख्रिस्तोस, अर्थात् "मसीह" से बहुत मिलता जुलता है। पौलुस के शब्द "कुछ काम का न होना" यूनानी में अख्रेस्तोस था, जिसमें "अ" उपसर्ग लगा है, और यूनानी भाषा में इसका अर्थ होता है "नहीं", और मूल शब्द ख्रेस्तोस का अर्थ है "काम का"। इसी प्रकार, "काम का" के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल यूनानी शब्द एयूख्रेस्तोस था, जिसमें "एयू" उपसर्ग लगा था जिसका अर्थ है "भला" या "अच्छा", और पुन: मूल शब्द ख्रेस्तोस का अर्थ है "काम का"। और शब्दों का खेल यह था- उनेसिमुस जब अख्रिस्तोस या "मसीह बिना" था तो वह अख्रेस्तोस या "किसी काम का नहीं" था। परन्तु एयूख्रेस्तोस या "बड़े काम का" बन गया जब ख्रिस्तोस को अपना प्रभु स्वीकार कर लिया।

पौलुस ने उन मार्गों की ओर भी संकेत किया जिनमें उनेसिमुस ने अपने अपराधों की भरपाई करना भी शुरु कर दिया था। जिस प्रकार पौलुस ने लिखा, उनेसिमुस पौलुस की सेवा में फिलेमोन का स्थान ले रहा था।

प्राचीन जगत में स्वामी द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को दास उधार दे देना कोई असामान्य बात नहीं थी। इस कार्य को एक उपहार के रूप में समझा जाता था, जैसे कि स्वामी ने उस कार्य को खो दिया जो दास उस उधारी के समय कर सकता था, और उस मित्र को लाभ पहुंचा जिसे वह दास उधार में दिया गया था। इस भाव में, उनेसिमुस के माध्यम से फिलेमोन वास्तव में पौलुस की सेवा कर रहा था। इसीलिए पौलुस ने कहा कि उनेसिमुस न केवल उसके लिए बल्कि फिलेमोन के लिए भी बड़े काम का बन गया है। अत: फिलेमोन के पास उनेसिमुस पर दया करने के और भी अधिक कारण थे।

अंत में, इस खण्ड में पौलुस ने यह उल्लेख भी किया कि उसने उनेसिमुस को फिलेमोन के पास भेज दिया है, संभवत: फिलेमोन के लिए पौलुस की पत्री देकर, और शायद तुखिकुस को उसके साथ यात्रा में भेजा। पौलुस ने फिलेमोन पद 12 में यह लिखते हुए इसका उल्लेख किया :

> उसी को... मैंने तेरे पास लौटा दिया है। (फिलेमोन 12)

उनेसिमुस फिलेमोन से मेलमिलाप करने और शायद स्वतंत्र कर दिए जाने की आशा के साथ फिलेमोन से दया की विनती करने के लिए कुलुस्से लौट रहा था। उनेसिमुस भगोड़ा नहीं था, और वह अपने स्वामी के न्याय का सामना करने के लिए लौट रहा था।

स्वामी के रूप में फिलेमोन

वकील के रूप में अपनी भूमिका और विनती करने वाले के रूप में उनेसिमुस की भूमिका का वर्णन करने के पश्चात् पौलुस ने पद 14 में स्वामी के रूप में फिलेमोन की भूमिका के बारे में बात करना जारी रखा।

यहां पौलुस ने उनेसिमुस पर फिलेमोन के अधिकार को मान्यता दी, और फिलेमोन को आज्ञा देने की अपेक्षा उससे आग्रह करने की अपनी प्रेरणा को प्रकट किया। फिलेमोन पद 14 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखा :

> पर मैं ने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से हो। (फिलेमोन 14)

पौलुस चाहता था कि स्वयं फिलेमोन सही कार्य का चुनाव करे। और इसलिए उसने इसे स्पष्ट किया कि उसकी विनती प्रैरितिक आज्ञा की अपेक्षा एक आग्रह के रूप में आई।

ऐसा हो सकता है कि वह चाहता था कि उसका मित्र सही कारण के साथ सही कार्य करने के द्वारा स्वर्गीय पुरस्कारों को ग्रहण करे। और शायद उसने सोचा कि दोनों के बीच स्वेच्छा से किया गया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मेलमिलाप मसीह में उनके भाईचारे के सबंध को और भी अधिक मजबूत कर देगा। इसके अतिरिक्त, ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस फिलेमोन के प्रति आदर दर्शाना, और उसकी भलाई को संदेह का लाभ प्रदान करना चाहता था। तब, यदि फिलेमोन उनेसिमुस के साथ अच्छा व्यवहार करता है, तो यह पौलुस और कलीसिया दोनों को काफी उत्साह प्रदान करेगा। पद 7-9 में पौलुस का यह तर्क था जहां उसने इस प्रकार लिखा :

> मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिये, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं। इसलिये यद्यपि (मैं तुझे आज्ञा दे सकता हूँ) तौभी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिये कैदी हूँ, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूं। (फिलेमोन 7-9)

वास्तव में, फिलेमोन के पूर्व के प्रेम और कलीसिया के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता ने पौलुस को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि फिलेमोन उनेसिमुस के प्रति प्रेम करने वाला और विश्वासयोग्य ठहरेगा।

पूरी तरह से संभव है कि पौलुस ने फिलेमोन को पारंपरिक रोमी स्वामी की भूमिका में न्याय के सिंहांसन पर बैठकर अपने दास पर निर्णय सुनाते हुए के रूप में दर्शाते हुए यह तरीका कई कारणों से चुना थ। वह उनेसिमुस को दण्डित करने को चुनकर कठोर निर्णय ले सकता था। या फिर मसीह की खातिर, और अपने मित्र प्रेरित पौलुस की लिए उनेसिमुस को क्षमा करके दया के साथ न्याय कर सकता था। यद्यपि पौलुस ने स्पष्ट कर दिया था कौनसा चुनाव सही था, परन्तु फिर भी चुनाव पूर्ण रूप से फिलेमोन को ही करना था।

शासक के रूप में परमेश्वर

अलग-अलग मानवीय समूहों को एक-दूसरे के साथ संबंध में दर्शाने के बाद पौलुस ने पद 15-16 में फिलेमोन को परमेश्वर की विधानीय शासक की भूमिका का स्मरण करवाया। इस खण्ड में, उसने उस महान् भलाई पर विचार व्यक्त किए जो परमेश्वर उनेसिमुस के पापों के माध्यम से ला सकता है यदि फिलेमोन उसके आग्रह को स्वीकार कर लेता है।

पौलुस ने फिलेमोन पद 15-16 में फिलेमोन से ये उत्साहवर्द्धक शब्द कहते हुए परमेश्वर के विधानीय हस्तक्षेप का वर्णन किया :

> क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। परन्तु अब से दास की नाई नहीं, वरन दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे जो मेरा तो विशेष प्रिय है ही, पर अब शरीर में भी और प्रभु में भी, तेरा भी विशेष प्रिय हो। (फिलेमोन 15-16)

प्रभु ब्राह्मांड की हर वस्तु को विधानीय रूप में नियंत्रित करता है। और वह प्राय: बुरी बातों को इसलिए घटित होने देता है कि उसके अच्छे उद्देश्य पूरे हो जाएं। पौलुस ने सुझाव दिया कि इस विषय में परमेश्वर ने उनेसिमुस और फिलेमोन के बीच झगड़े को प्रेरित करने वाली घटनाओं की अनुमति इसलिए दी कि उनेसिमुस पौलुस की सहायता पाने के लिए मजबूर हो जाए। और प्रभु ने इसकी अनुमति इसलिए दी कि पौलुस की सेवकाई के द्वारा उनेसिमुस मसीह के विश्वास में लाया जा सके और इस तरह प्रभु में साथी होने के रूप में उसका फिलेमोन से मेलमिलाप हो जाए।

ब्राह्मांड पर परमेश्वर के विधानीय नियंत्रण के बारे में बात करने के द्वारा पौलुस ने फिलेमोन से उनेसिमुस के साथ उसके झगड़े को भुलाने के लिए कहा ताकि वह परमेश्वर के दृष्टिकोण से इसे देख सके।

हां, फिलेमोन क्रोधित था, और क्रोधित होना उसका अधिकार भी था। परन्तु इस झगड़े के द्वारा परमेश्वर द्वारा उंडेली गईं आशीषों की तुलना में उनेसिमुस की समस्याएं महत्वरहित थीं।

फिलेमोन एक अच्छा व्यक्ति था। और यदि एक बार उसने महसूस कर लिया कि एक खोई हुई आत्मा को बचाने के लिए परमेश्वर ने उनेसिमुस के साथ इस झगड़े की अनुमति दी थी, तो उसका क्रोध आनन्द में बदल जाएगा, जैसी कि पौलुस की आशा थी।

विनती

मध्यस्थता में शामिल सभी चरित्रों का परिचय देने के बाद अंत में पौलुस ने पद 17-20 में अपनी विनती को दर्शाया। विशेषकर, उसने फिलेमोन से उनेसिमुस को क्षमा कर देने के लिए कहा, और उनेसिमुस के स्थान पर स्वयं को प्रस्तुत किया यदि फिलेमोन अपने दास से पूरी रकम या उसका हर्जाना चाहता है।

फिलमोन पद 17 और 18 में पौलुस की द्विरूपी विनती को सारगर्भित किया गया है :

> उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। यदि उसने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। **(फिलेमोन 17-18)**

ध्यान दें यहां पौलुस ने क्या किया- उसने फिलेमोन से व्यक्तिगत सहायता का आग्रह किया, जैसे कि स्वयं पौलुस को फिलेमोन की कृपा की आवश्यकता हो। उसने यह तर्क नहीं दिया कि उनेसिमुस फिलेमोन के साथ पुन: स्थापित होने के योग्य है। इसके विपरीत, उसका आशय था कि उनेसिमुस सजा का हकदार था। और उसने फिलेमोन से उनेसिमुस के प्रति मसीह जैसी दया दिखाने को भी नहीं कहा।

प्रतीकात्मक रूप में, पौलुस उनेसिमुस के लिए फिलेमोन से दया की अपील करते हुए उसके बचाव अभिवक्ता के रूप में उसके साथ खड़ा नहीं हुआ। इसकी अपेक्षा, उनेसिमुस के सामने उसके पिता के रूप में उसका फिलेमोन से बचाव करते हुए खड़ा हुआ, और फिलेमोन को वे कारण बताए जिनके कारण वे पौलुस के लिए दयालु बने।

सुनें फिलेमोन पद 20 में किस प्रकार पौलुस ने अपनी विनती की समाप्ति की :

> हे भाई, यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले। मसीह में मेरे जी को हर-भरा कर दे। **(फिलेमोन 20)**

पौलुस की आशा थी कि फिलेमोन पौलुस का इतना सम्मान करे कि वह पौलुस के आत्मिक पुत्र उनेसिमुस पर दया करे। और इसलिए, अपनी विनती में पौलुस ने फिलेमोन से अपने पुत्र, जिससे उसने अपने पूरे हृदय से प्रेम किया, के प्रति दया दिखाने के द्वारा प्रेरित की सेवा करने को कहा।

यहां पौलुस की भाषा पर ध्यान दें। पहला, पौलुस ने यूनानी क्रिया ओनिनेमी, जिस पर उनेसिमुस का नाम आधारित था, का प्रयोग करके फिलेमोन से "उसे" लाभ पहुंचाने को कहा। वास्तव में, उसने फिलेमोन से पौलुस के प्रति उपयोगी होने में उसके दास उनेसिमुस के उदाहरण का अनुसरण करने को कहा।

दूसरा, पौलुस ने शब्द "हरा-भरा" या "ताजगी देने" के प्रयोग को दोहराया। फिलेमोन पद 7 में पौलुस ने फिलेमोन से पवित्र लोगों के मन को हरा-भरा करने की आज्ञा दी थी। यहां उसने फिलेमोन से कारागृह में रह रहे प्रेरित के मन को भी हरा-भरा करने के द्वारा खराई को दर्शाने के लिए उत्साहित किया।

विद्वानों ने पौलुस की विनती के विवरणों के विषय में अनेक प्रश्न उठाए हैं। कुछ विश्वास करते हैं कि पौलुस फिलेमोन से दया और कृपा के साथ उनेसिमुस से व्यवहार करने को, और जो नुकसान उनेसिमुस ने किया था उसके हर्जाने या प्रत्यर्पण की मांग न करने को ही कह रहा था। वहीं दूसरे मानते हैं

कि पौलुस फिलेमोन से इससे भी अधिक की मांग कर रहा था, शायद उनेसिमुस की दास्यमुक्ति, अर्थात् उसकी स्वतंत्रता।

इसे फिलेमोन पद 15-16 में पौलुस के शब्दों में देखा जा सकता है, जहां पौलुस ने इस प्रकार लिखा :

> (वह) सदैव तेरे निकट रहे। परन्तु अब से दास की नाई नहीं, वरन दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे। (फिलेमोन 15-16)

इस पद को इस भावार्थ में पढ़ना भी संभव है कि पौलुस फिलेमोन से चाहता था कि वह उनेसिमुस को स्वतंत्र कर दे, ताकि उनेसिमुस फिर दास न रहे। इस विचार को और भी बल मिलता जब हम देखते हैं कि यूनानी शब्द आयोनियोन को हिन्दी में "सदैव" के रूप में अनुदित किया जाता है। (कुछ अंग्रेजी अनुवाद इसे "for good" के रूप में अनुदित करते हैं।) यद्यपि रोमी दासता चिरस्थाई थी, परन्तु तकनीकी रूप में यह एक अस्थाई व्यवस्था थी, अत: पौलुस फिलेमोन को उचित रूप में आश्वस्त नहीं कर पाया कि उनेसिमुस सदैव उसका लाभदायक दास बना रहेगा। परन्तु मसीह में हमारा संबंध वास्तव में सदैव तक बना रहेगा। यह बात इस पद में हमें फिलेमोन द्वारा उनेसिमुस को दास्यमुक्ति देने या स्वतंत्र करने के भाव को दर्शाती है।

इसके साथ-साथ यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने यह नहीं सिखाया था मसीह विश्वास सभी मसीही स्वामियों से उनके विश्वासी दासों को स्वतंत्र करने की मांग करता है। 1कुरिन्थियों 7:21 में उसने यह अवश्य सिखाया था कि स्वतंत्रता दासत्व से अधिक चाहनेयोग्य है। परन्तु उन परिवारों को दिए गए उसके निर्देशों में जिनमें विश्वासी स्वामी विश्वासी दासों को रखते थे, दास्यमुक्ति शामिल नहीं थी। उदाहरण के तौर पर, 1तीमुथियुस 6:2 में उसने यह शिक्षा दी :

> (जिन दासों के) स्वामी विश्वासी हैं, वे इसलिए उनका कम आदर न करें क्योंकि वे भाई है बल्कि वे उनकी सेवा और भी अधिक करें क्योंकि उनकी सेवाओं से जिन्हें लाभ मिलता है वे विश्वासी और प्रिय हैं। इन बातों की शिक्षा दे और प्रोत्साहित कर। (1तीमुथियुस 6:2)

उन भिन्न रूपों के प्रकाश में जिनमें दासत्व पूरे इतिहास में भयानक दुर्व्यवहार की प्रथा रही है, पौलुस को इस प्रकार से बोलते हुए सुनना अजीब प्रतीत हो सकता है। आखिरकार, जब आज के अधिकांश लोग दासत्व के बारे में सोचते हैं, तो हमारा ध्यान तुरंत अफ्रीकी दास व्यापार में हुई भयानक नृशंसता की ओर चला जाता है। हम उन लोगों के बारे में सोचते हैं जिनको बलपूर्वक गुलाम बना लिया गया, उनके परिवारों से अलग कर दिया गया, और सबसे अमानवीय व्यवहार उनके साथ किया गया।

उनका बलात्कार किया गया, उन्हें मारा गया, दागा गया और मृत्यु के घाट उतार दिया गया। और हमारे लिए शर्म की बात है कि अनेक मसीहियों ने बाइबल में से प्राचीन दासत्व की दलीलें देकर इस निर्दयता का समर्थन किया। परन्तु वे घातक रूप से एवं विनाशकारी रूप से गलत थे। न तो पौलुस ने और न ही बाइबल के किसी अन्य लेखक ने इन क्रियाओं की पुष्टि की है। इसकी अपेक्षा उन्होंने कड़े शब्दों में उनकी निन्दा ही की होगी।

परन्तु पौलुस के संदर्भ में दासत्व अलग था। यह सामान्यत: सकारात्मक आर्थिक व्यवस्था थी जब स्वामी और दास दोनों मसीही हों। और वास्तविकता यह थी कि दोनों स्वामी और दास एक ही परिवार में रहते थे, और परमेश्वर द्वारा उनसे मांग की जाती थी कि वे एक-दूसरे के प्रति सेवकाई करें और एक-दूसरे से प्रेम करें। वे सभी लक्ष्यों और उद्देश्यों में एक विस्तृत परिवार थे।

और क्योंकि ये संबंध भक्तिपूर्ण और सबके लिए लाभदायक रूपों में निभाए जाते थे, इसलिए पौलुस ने कलीसिया को इस सामाजिक प्रथा को तोड़ने का निर्देश नहीं दिया। इसकी अपेक्षा, उसने दासत्व को मसीहरूपी संबंध में चलाने की शिक्षा दी।

हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि पौलुस उनेसिमुस के लिए सर्वोत्तम चाहता था, और फिलेमोन जानता था कि प्रेरित की अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया जाए। परन्तु पौलुस की अस्पष्ट भाषा से हमारे लिए यह समझना असंभव है कि क्या वह फिलेमोन से उनेसिमुस को क्षमा करके अपने घर के सम्मानित दास के रूप में व्यवहार करने को ही कह रहा था या उसकी कानूनी स्वतंत्रता की मांग कर रहा था। उनेसिमुस की दक्षताओं और परिस्थितियों के अधिकांश विवरणों को जानने के बिना हमारे लिए यह अनुमान लगाना कठिन है कि कौनसा परिणाम उसे अधिक लाभ पहुंचाता। परन्तु जैसा भी हो, यह स्पष्ट है कि पौलुस की विनती उनेसिमुस के लिए अच्छा जीवन प्रदान करने के आधार पर रचित थी, ऐसा जीवन जिसमें उसके साथ मसीही सम्मान और आदर के साथ व्यवहार किया जाए, और कलीसिया के द्वारा उसके प्रति प्रेम और दया दिखाई जाए।

भरोसा

अंत में, फिलेमोन के समक्ष अपनी विनती को प्रस्तुत करने के बाद, पौलुस ने पद 21 में भरोसे के कथन के साथ समाप्ति की। यहां, पौलुस ने अपने विश्वास को व्यक्त किया कि फिलेमोन वैसा ही करेगा जैसा प्रेरित ने कहा है। हम फिलेमोन पद 21 में पौलुस की विनती के अंतिम शब्दों को पढ़ते हैं :

> मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर, तुझे लिखता हूँ और यह जानता हूँ, कि जो कुछ मैं कहता हूँ, तू उस से कहीं बढ़कर करेगा। (फिलेमोन 21)

पौलुस के पास इस बात पर विश्वास करने के दो मजबूत कारण थे कि फिलेमोन उसके आग्रह को स्वीकार करेगा। पहला, फिलेमोन पौलुस को आदर देता था और उसे सम्मान देता था, और इसलिए वह उसे प्रसन्न करने के लिए प्रेरित होगा। और दूसरा, फिलेमोन कलीसिया से प्रेम करता था, जिसमें उनेसिमुस अभी शामिल हुआ था।

पवित्रशास्त्र हमें फिलेमोन के प्रत्युत्तर को नहीं दर्शाता है, और न ही हमें यह बताता है कि उनेसिमुस के साथ क्या हुआ। कई सदियों तक यह माना जाता था कि फिलेमोन ने उसे स्वतंत्र कर दिया था, और कि वह अंत में इफिसुस का अध्यक्ष बना और 95 ईस्वी में शहीद के रूप में उसकी मृत्यु हुई। और निश्चित ही उनेसिमुस नाम का एक अध्यक्ष था जो पहली सदी में तीमुथियुस के बाद अध्यक्ष बना था।

परन्तु वास्तव में उनेसिमुस एक आम नाम था, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि यही दास वह अध्यक्ष हो। उसके साथ-साथ, पौलुस के द्वारा प्रशिक्षित मसीही आसानी से इस महत्वपूर्ण स्थान तक उठ सकता था, इसलिए हमें इस संभावना को भी निरस्त नहीं करना चाहिए।

जैसे भी हो, फिलेमोन में पौलुस का भरोसा हमें इस बात पर विश्वास करने को प्रेरित करना चाहिए कि उसने वही किया जो उनेसिमुस के लिए सर्वोत्तम था। और कुछ विद्वानों के अनुसार यह तथ्य कि आज भी हमारे पास फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री मौजूद है, यह दर्शाती है कि फिलेमोन ने वही किया जो उचित था, क्योंकि यदि उसने पौलुस के आग्रह को स्वीकार नहीं किया होता तो शायद उसने उसके प्रमाण को भी मिटा दिया होता।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंतिम अभिनंदन

अब जब हमने फिलेमोन के समक्ष पौलुस की विनती को देख लिया है तो हमें इस पत्री के अंतिम खण्ड की ओर मुड़ना चाहिए- फिलेमोन और उसके परिवार को अंतिम अभिनंदन, जो फिलेमोन 22-25 में पाया जाता है।

यह खण्ड पद 24 में स्तरीय अभिनंदन और पद 25 में काफी स्तरीय आशीष को रखता है। परन्तु पहले के पदों में पाए जाने वाले दो विवरण विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

पहले पद 22 में पौलुस ने अपनी अपेक्षा को अभिव्यक्त किया कि वह शीघ्र ही कारागृह से स्वतंत्र हो जाएगा, और उसने फिलेमोन से उसके लिए एक कमरा तैयार करने को कहा। कोई संदेह नहीं कि इस बात ने फिलेमोन को पौलुस के आग्रह को स्वीकार करने को उत्साहित किया होगा, क्योंकि उसे निकट भविष्य में स्वयं प्रेरित से भेंट करनी थी।

दूसरा, जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले उल्लेख किया था, पौलुस ने पद 23 में यह दर्शाते हुए इपफ्रास से विशेष अभिनंदन भेजा था कि इपफ्रास फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच के मामले को सुलझाने की साक्षी के रूप में कार्य करे।

अब जब हमने फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि और इसकी संरचना एवं विषय-वस्तु की जांच कर ली है, तो अब हम उनेसिमुस के लिए पौलुस की उदाहरणीय वकालत के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा करने की स्थिति में हैं।

आधुनिक प्रयोग

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री के इतने महत्वपूर्ण होने का एक कारण यह है कि यह हमें दर्शाती है कि किस प्रकार उसने अपने धर्मविज्ञान को अपने जीवन में लागू किया। जब हम कुलुस्सियों और इफिसियों को लिखी उसकी पत्रियों को देखते हैं तो हम उसकी शिक्षाओं के अनेक सामान्य कथनों एवं परिकाल्पनिक प्रयोगों को देखते हैं। और ये हमारे लिए बहुत सहायक हैं। परन्तु फिलेमोन को लिखी उसकी पत्री में हम सामान्य से विशिष्ट की ओर, परिकाल्पनिक से वास्तविक की ओर, निर्देश से क्रिया की ओर मुड़ते हैं। हम पौलुस को अपनी धर्मशिक्षाओं का पालन करते हुए मसीही के रूप में जीवन बिताते हुए देखते हैं।

और इसलिए जब हम फिलेमोन की पुस्तक के आधुनिक प्रयोग को पाने का प्रयास करते हैं, तो हम उन मार्गों पर विशेष ध्यान देंगें जिनमें उनेसिमुस और फिलेमोन के बीच पौलुस की मध्यस्थता उसकी अन्य पत्रियों, विशेषकर कुलुस्सियों और इफिसियों में पाई जानेवाली शिक्षाओं के अनुसार थी।

जब हम फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री के आधुनिक प्रयोग पर ध्यान देते हैं, तो हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे- पहला, मसीहियों के बीच उत्तरदायित्व की आवश्यकता; दूसरा, कलीसिया में हमारे संबंधों में करुणा का महत्व; और अंत में, परमेश्वर के परिवार में मेलमिलाप का महत्व। आइए पहले हम मसीहियों के बीच उत्तरदायित्व की आवश्यकता की ओर मुड़ें।

उत्तरदायित्व

जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं, फिलेमोन को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने उनेसिमुस के लिए अपनी वकालत में कई लोगों के नामों को अपने गवाहों के रूप में प्रकट किया, जैसे अफफिया,

अरखिप्पुस, इपफ्रास और कुलुस्से की स्थानीय कलीसिया। यद्यपि पौलुस ने ऐसा करने का कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया, परन्तु सबसे सर्वोत्तम कारण यही लगता है कि उसे आशा थी कि उनकी चौकस निगाहें फिलेमोन को उचित कार्य करने को उत्सहित करेंगी।

उसकी यह विधि इफिसियों 5:11-21 में उसकी शिक्षा के अनुकूल है। हम इस अनुच्छेद के अनेक खण्डों को देखेंगे; आइए इफिसियों 5:11-15 से शुरु करें जहां पौलुस ने ये निर्देश दिए :

> अंधकार के निरर्थक कार्यों में सम्मिलित न हो, बल्कि उन्हें प्रकट करो। क्योंकि उनके गुप्त कार्यों की चर्चा भी शर्मनाक है। परन्तु जिन्हें ज्योति के द्वारा प्रकट किया जाता है, वे स्पष्टत: प्रकट हो जाते हैं... इसलिए सावधानीपूर्वक देखो कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं बल्कि बुद्धिमानों के समान चलो। **(इफिसियों 5:11-15)**

पौलुस ने सिखाया कि मसीहियों को पाप को बाहर निकालना है। उसका तर्क था कि जो पाप करते हैं वे उनके बाहर आने के कारण शर्मिन्दा होंगें। तो सही कार्य यह है कि हम अपने जीवन को ज्योति के समक्ष रखें, अर्थात् ज्योति के राज्य की संगति में ताकि हम पाप करने से बच जाएं।

अब, पौलुस यह नहीं कह रहा था कि मसीही नजर लगाए रखें और ध्यान रखें कि कोई अकेला न हो, या एक-दूसरे की जासूसी करते रहें। बल्कि, वह उत्तरदायित्व के ज्ञान की ओर संकेत कर रहा था। जब हम अपना जीवन दूसरों के सामने खोल कर जीते हैं, जब दूसरे जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं, तो हम परीक्षा में पड़ने को कम लालायित होंगे। इसका एक कारण यह है कि हम तब कुछ पापों को करने में शर्मिन्दा होते हैं जब दूसरे उनके बारे में जानते हैं।

उनेसिमुस और फिलेमोन के विषय में यदि कोई भी पौलुस की पत्री के विषय में नहीं जानता, और यदि स्वयं पौलुस फिलेमोन से आग्रह करने की योजना नहीं बनाता, तो कोई भी उचित कार्य करने के लिए फिलेमोन को उत्तरदायी नहीं ठहरा पाता। यदि उसने उनेसिमुस के साथ कठोरता से व्यवहार किया होता तो केवल फिलेमोन को ही पता होता कि उसने पौलुस के आग्रह का उल्लंघन किया है।

परन्तु विषय को सार्वजनिक बनाने के द्वारा पौलुस ने निश्चित किया कि यदि वह उनेसिमुस से कठोरता से व्यवहार करेगा तो वह अपने परिवार और कुलुस्सियों की कलीसिया की असहमति का सामना करेगा। इस चेतावनी ने उसे उचित कार्य करने की प्रेरणा दी। पुराने नियम में स्वयं परमेश्वर ने अपने लोगों को उचित कार्य करने की प्रेरणा देने के लिए शर्मिन्दा करने की विधि का प्रयोग किया था।

उदाहरणस्वरूप, हबक्कूक 2:16 में भविष्यवक्ता ने यहूदा के समक्ष परमेश्वर के इन शब्दों की घोषणा की :

> तू महिमा की बदले अपमान ही से भर गया है... जो कटोरा यहोवा के दहिने हाथ में रहता है, सो घूमकर तेरी ओर भी जाएगा, और तेरा वैभव तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा। **(हबक्कूक 2:16)**

परमेश्वर ने यहूदावासियों को शर्मिन्दा करने की चेतावनी दी ताकि वे अपने पापों से फिरें। और यहेजकेल 7:18 में परमेश्वर ने उन्हें शर्मिन्दा करने की निम्नलिखित चेतावनी के साथ इस्राएल को आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया :

> और वे कमर में टाट कसेंगे, और उनके रोए खड़े होंगे; सब के मुंह सूख जाएंगे और सब के सिर मूंड़े जाएंगे। **(यहेजकेल 7:18)**

इसी प्रकार, आधुनिक कलीसिया में हमारे अन्दर अनेक गुप्त पाप पाए जाते हैं। मसीही इन अनेक पापों के साथ जीने के लिए तैयार हैं, परन्तु वे शर्मिन्दा होंगे अगर दूसरे उनके बारे में जान लें। अत: इन पापों के प्रति कलीसिया द्वारा हमें उत्तरदायी ठहराने का एक तरीका यह है कि विश्वासी एक-दूसरे के साथ करीबी संगति में रहें।

परन्तु शर्मिन्दगी ही एकमात्र निवारण नहीं है जो उत्तरदायित्व प्रदान करता है। इसके विपरीत, फिलेमोन में पौलुस का उदाहरण बल देता है कि मसीही मनोहर संगति के द्वारा एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी होने चाहिए। इफिसियों 5:19 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> **और परस्पर भजन, स्तुति-गायन और आत्मिक गीत गाते... रहो। (इफिसियों 5:19)**

मसीही एक-दूसरे के प्रति उत्साह के शब्द कहकर भी एक-दूसरे को पाप करने से रोक सकते हैं।

अंत में, पौलुस ने संकेत दिया कि हमें परस्पर समर्पण, जो विश्वासियों को परस्पर रखना चाहिए, के द्वारा एक-दूसरे को उत्तरदायी ठहराना है। इफिसियों 5:21 में उसके शब्दों को सुनें :

> **और मसीह के भय में परस्पर समर्पित रहो। (इफिसियों 5:21)**

कलीसिया को एक पवित्र स्थान, परमेश्वर के आज्ञाकारी लोगों की संगति बनना है। और इसका अर्थ है कि कलीसिया का परामर्श भक्तिपूर्ण और धार्मिक होना चाहिए।

अत: जब हम एक दूसरे को भले कार्यों के प्रति उत्साहित करते हुए परस्पर संगति में रहते हैं, तो हमें उन मार्गों पर विशेष ध्यान देना हैं जिनमें हमारी कलीसिया के अगुवे और परंपराएं हमें व्यवहार करने को प्रशिक्षित करते हैं, और बुद्धिमान एवं परमेश्वर का भय रखने वाले विश्वासियों की परामर्श पर भी।

सारांश में, उनेसिमुस के साथ फिलेमोन के व्यवहार के प्रति पौलुस के गवाहों के माध्यम से हम समझते हैं कि पापों के प्रति असहमति दर्शाने के द्वारा, उत्साहवर्द्धन के द्वारा और कलीसिया के बुद्धिमानपूर्ण परामर्श के द्वारा कलीसिया पाप को रोक सकती है और भले कार्यों को उत्साहित कर सकती है।

अब जब हमने उस आशय को देख लिया है जो पौलुस की फिलेमोन को लिखी पत्री कलीसिया में उत्तरदायित्व के प्रति दर्शाती है, तो हमें प्रयोग के अपने दूसरे बिंदु की ओर मुड़ना चाहिए- मसीहियों के साथ हमारे संबंध में करुणा का महत्व।

करुणा

मसीह की पृथ्वी पर की गई सेवा में उसके सभी चरित्रों में से शायद करुणा ऐसा चरित्र था जो सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाला था। हां, पवित्रता और सम्मान के प्रति उसमें उत्साह था, और धार्मिकता और नैतिकता पर उसका बल अकाट्य था। और उसने अतुलनीय बुद्धि, खराई और गरिमा को दर्शाया।

परन्तु उनसे अधिक स्मरणीय हैं उसकी दया, तरस, परवाह, दूसरों के प्रति उसका प्रेम, क्षमा करने की उसकी उत्सुकता, कष्ट सहने की उसकी इच्छा ताकि दूसरों को न सहना पड़े। यह मुर्दों को जीवित करने, जीवितों का समाना करने, बीमारों को स्वस्थ करने, लंगड़ों को चंगा करने, भूखों को भोजन खिलाने, खोए हुओं, चोटिल और डरे हुओं की चरवाही करने- और अपने से घृणा करने वालों के लिए क्रूस पर जान दे देने की कहानियां हैं। सारांश में, यह मसीह की करुणा ही है जो हमारे हृदयों को बहुत ही

गहराई से स्पर्श करती है। और यह वही करुणा है जिसका फिलेमोन को लिखी उसकी पत्री में उसकी स्तुति, शिक्षा और उदाहरण के माध्यम से अनुसरण करने के लिए पौलुस ने हमें उत्साहित किया है।

फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में हम दो प्रकार की करुणा पर चर्चा करेंगे- दया और उपकार के साथ आंरभ करेगे, और फिर मध्यस्थता के कार्यों पर ध्यान देंगे। आइए, दया के कार्यों को मसीही करुणा के उदाहरणों के रूप में समझते हुए आरंभ करें।

दया

पौलुस ने सभी विश्वासियों को दया और उपकार दर्शाने की शिक्षा दी जब उसने कलीसिया के प्रति सेवा में फिलेमोन की प्रशंसा की, और जब उसने फिलेमोन के समक्ष रखकर अपनी विनती के आधार के रूप में इनके प्रति अपील की। फिलेमोन पद 7-9 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिये, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं... मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिये कैदी हूँ, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूं। (फिलेमोन 7-9)

पौलुस उत्साहित था कि किस प्रकार फिलेमोन ने पवित्र लोगों के हृदय को हरा-भरा कर दिया था, अर्थात् कि किस प्रकार उसने दूसरे विश्वासियों के प्रति दया को प्रकट किया था। और पौलुस इस आधार पर वैसे उपकार को पाना चाहता था कि वह एक वृद्ध व्यक्ति है और कारागृह में है, वह जो दया के योग्य एवं सहायता की आवश्यकता में है। जैसा उसने कुलुस्सियों 3:11-12 में लिखा :

> मसीह सब कुछ और सब में है। इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। (कुलुस्सियों 3:11-12)

क्योंकि अन्य विश्वासी यीशु से जुड़े हुए हैं इसलिए हमें उनकी भरपूर देखभाल करते हुए और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उनसे वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम प्रभु से करते हैं, और जैसा प्रभु हमसे व्यवहार करता है।

इन और कई अन्य रूपों में पौलुस ने दिखाया कि दया और उपकार मसीही जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। और इसलिए, पौलुस और फिलेमोन के समान आधुनिक मसीही भी कलीसिया के लोगों के प्रति दया और प्रेम से प्रेरित हो जाएं, और हम अपनी पूरी क्षमता से उनकी आवश्यकताओं के प्रति प्रत्युत्तर दें।

मध्यस्थता

दूसरे प्रकार की करुणा जिसके बारे में पौलुस ने फिलेमोन को लिखी अपनी पत्री में उत्साहित किया, वह था मध्यस्थता। मध्यस्थता कई रूप ले सकती है। एक ओर यह बिना किसी व्यक्तिगत जोखिम के मत की अभिव्यक्ति हो सकती है जो किसी दूसरे के पक्ष में परिस्थिति को बदल दे। दूसरी ओर यह इतनी तीव्र हो सकती है कि कोई किसी दोषी को बचाने के लिए अपनी जान भी दे दे। इस प्रकार की मध्यस्थता का सबसे स्पष्ट उदाहरण मसीह का बलिदान है जो पापियों को उद्धार दिलाने के लिए दिया गया।

और इन दो छोरों के बीच में, कई अन्य प्रकार की मध्यस्थताएं भी संभव हैं। फिलेमोन पद 17-19 में उनेसिमस के लिए फिलेमोन को कहे गए पौलुस के शब्दों को सुनें :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले... मैं आप भर दूंगा। (फिलेमोन 17-19)

पौलुस के उदाहरण के माध्यम से आधुनिक मसीहियों को इसी प्रकार से अन्य विश्वासियों के लिए मध्यस्थता करने के लिए बुलाया गया है। कभी-कभी हमें सरल रूपों में मध्यस्थता करने लिए बुलाया जाता है। वही अन्य समयों में दूसरों के प्रति हमारी करुणा हमें मध्यस्थता के बड़े स्तरों के लिए बुलाती है।

और कुछ विषयों में करुणा हमें दूसरों के लाभ या उनकी सुरक्षा के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर देने के द्वारा मध्यस्थता करने को भी बाध्य करती है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 5:1-2 में लिखा :

> परमेश्वर के अनुयायी बनो, और प्रेम की चाल चलो जिस प्रकार मसीह ने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए स्वयं को परमेश्वर के समक्ष एक मधुर सुगंध-रूपी भेंट बनकर बलिदान कर दिया। (इफिसियों 5:1-2)

अब जब हमने उन मार्गों को देख लिया है जिन्हें फिलेमोन में पौलुस की शिक्षा कलीसिया में उत्तरदायित्व और मसीही करुणा पर लागू करती है, तो अब हम अपने अंतिम बिंदु की ओर मुड़ने के लिए तैयार है- हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों का एक-दूसरे से मेलमिलाप।

मेलमिलाप

जब हम मेलमिलाप के बारे में बात करते हैं, हमें यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हम केवल वहां एकता बनाने और प्रेम के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जहां पर ये नहीं पाए जाते। बल्कि हम वहां एकता बनाने और प्रेम की बात कर रहे हैं जहां पहले शत्रुता पाई जाती थी। मेलमिलाप क्षमा और दया में स्थिर होता है, और यह धैर्य, और सहनशीलता के द्वारा बनाए रखा जाता है। यह मानता है कि हमारे भीतर मतभेद का एक स्रोत है, परन्तु हमें कुछ बेहतर, अर्थात एक-दूसरे के साथ परस्पर शांति, एक-दूसरे के लिए परस्पर प्रेम और एक-दूसरे के लिए परस्पर सेवकाई को प्राप्त करने के लिए इस मतभेद को अलग रखना है।

कुलुस्सियों और इफिसियों को लिखी अपनी पत्रियों में पौलुस ने बार-बार व्यक्तिगत और सामूहिक या जातीय दोनों स्तरों पर विश्वासियों के बीच मेलमिलाप के बारे में बात की। और उसने इस मेलमिलाप का वर्णन सुसमाचार के एक आवश्यक तत्व के रूप में किया।

पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि उनेसिमुस और फिलेमोन दोनों का दायित्व था कि वे अपने संबंधों को पुनरुस्थापित करें और बिना कोई मनमुटाव रखे एक-दूसरे को मसीह में भाइयों के रूप में स्वीकार करें। उनेसिमुस को अपनी ओर से पापों से पश्चाताप करना था, जो उसने पौलुस की सेवकाई में मसीहियत को ग्रहण करते समय कर लिया था। और फिलेमोन के दास के रूप में उसे स्वयं को फिलेमोन के निर्णय के प्रति भी समर्पित करना था। बदले में फिलेमोन का दायित्व था कि वह उनेसिमुस से प्रेम करे, दया के साथ उससे व्यवहार करे, उसके पापों को क्षमा करे और मसीह में भाई के समान उसे स्वीकार करे। इसी प्रकार, आधुनिक मसीहियों को भी पश्चाताप करने, एक-दूसरे को क्षमा करने और पुन: सही संबंध बनाने के लिए उत्सुक रहना चाहिए।

इसी प्रकार पौलुस के दिनों में भी कलीसिया में भिन्न स्थानों और जातियों के लोगों के बीच तनाव, अप्रसन्नता और अन्य मतभेद पाए जाते थे, और पौलुस यह तर्क नहीं दे रहा था कि वह प्रत्येक व्यक्ति जो

ऐसे संघर्ष को महसूस करता है वह उद्धार नहीं पाया है। बल्कि, वह कह रहा था कि ऐसी समस्याओं के आधार को मसीह द्वारा मिटा दिया गया है, जिससे कलीसिया में सभी जातीय और भौगोलिक संघर्ष अवैध थे और इसलिए पापमय थे। उदाहरण के तौर पर इफिसियों 2:14-16 में उसने इन शब्दों के साथ यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के बीच मेलमिलाप के बारे में लिखा :

> (मसीह) हमारा मेल है जिसने दोनों को एक साथ मिला दिया और विभाजित करने वाली बीच की दीवार को ढ़ा दिया,... ताकि दोनों से वह अपने में एक मनुष्य बनाए और मेल स्थापित करे, और क्रूस पर शत्रुता को मिटा डालने के द्वारा वह दोनों का परमेश्वर के साथ एक देह में मेल-मिलाप कराए। (इफिसियों 2:14-16)

यहां पौलुस के तर्क के अनुसार मसीह में यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के बीच मेलमिलाप मसीह के साथ हमारे संयोजन का एक पहलू है, और इसलिए परमेश्वर के साथ हमारे मेलमिलाप में यह एक आवश्यक चरण है।

जातीय और भौगोलिक संघर्ष, और विश्वासियों के बीच पाई जाने वाली किसी भी अन्य भिन्नता जो समस्याओं का स्रोत बन जाती है, के विषय में यह आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। क्योंकि हम मसीह से संयोजित है, हम सब क्षमा और आशीष पाए हुए है। इसलिए किसी भी विश्वासी के साथ मेल करने से इनकार करने का हमारे पास कोई आधार नहीं है। हमारे प्रभु ने हमारे बीच के मतभेद के हर आधार को हटा दिया है ताकि हम अपने बीच के संघर्ष को पाप के रूप में देखें और मसीह की देह में एकता, प्रेम और सामंजस्य लाने का प्रयास करें। इफिसियों 4:32 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणामय बनो, और उसी प्रकार एक-दूसरे को क्षमा करो जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें क्षमा किया है। (इफिसियों 4:32)

और कुलुस्सियों 3:13-15 में उसकी शिक्षा पर ध्यान दें :

> और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है, बान्ध लो और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो। (कुलुस्सियों 3:13-15)

हमें अपनी पूर्वधारणाओं और आपसी मतभेद को त्यागने, और एक-दूसरे से प्रेम करने, प्रत्येक मसीही को मसीह की दृष्टि से देखने, और साथ मिलकर शांति का आनन्द लेने के लिए बुलाया गया है। विश्वासियों के बीच मेलमिलाप आधुनिक कलीसिया की सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने पौलुस द्वारा कुलुस्से में रहने वाले अपने मित्र के नाम लिखी पत्री का ध्यान से आकलन किया है। हमने पत्री की पृष्ठभूमि की जांच की है, और हमने पत्री की संरचना और विषय-वस्तु का अध्ययन भी किया है। और अंत में, फिलेमोन को लिखी पौलुस की पत्री में उसके उदाहरण से लिए गए कई आधुनिक प्रयोगों पर भी चर्चा की है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिलेमोन को लिखी गई पत्री नए नियम का एक छोटा परन्तु अद्भुत खण्ड है। यह हमें अद्वितीय विचार प्रदान करती है कि किस प्रकार प्रेरित पौलुस ने दूसरे विश्वासियों से व्यवहार किया और इस बात की पुष्टि भी करती है कि उसने उन्हीं धर्मशिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताया जो उसने सिखाई थीं। इससे बढ़कर, यह हमें इस बात को भी सिखाती है कि हमें कलीसिया के प्रत्येक विश्वासी को महत्व देना चाहिए, और उन मार्गों को भी जिनके द्वारा उनको दिया गया उचित महत्व हमारे जीवनों को प्रभावित करे, विशेषकर जब बात सही संबंधों को बनाए रखने की हो।

जब हम उन सिद्धांतों के अनुसार जीवन बिताते हैं जो पौलुस ने फिलेमोन को लिखी अपनी पत्री में हमारे लिए रखे हैं, तो हम मसीह की महिमा के लिए एक-दूसरे के प्रति और कलीसिया की बढ़ोतरी के प्रति सेवकाई करने में अपने पूरे प्रयास करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।